CHETANA
International Journal of Education (CIJE)
Peer Reviewed/Refereed Journal
ISSN : 2455-8279 (E)/2231-3613 (P)
Impact Factor
SJIF 2026-8.584

Prof. A.P. Sharma
Founder Editor, CIJE
(25.12.1932 - 09.01.2019)

कस्तुरबा गांधी बाालिका विद्यालय में अध्ययनरत् छात्राओं की समायोजन क्षमता का अध्ययन

मनीषा सेपट
बी.एड. एम.एड. छात्रा
डॉ. सुनिता शर्मा
असोसिएट प्रोफेसर
बियानी गर्ल्स बी.एड. कॉलेज, जयपुर
Email : Sepatmanisha887@gmail.com, Mobile- 9461482052

First draft received: 18.04.2026, Reviewed: 22.04.2026
Final proof received: 15.05.2026, Accepted: 23.06.2026

सार-संक्षेप

प्रस्तुत शोध अध्ययन का विषय "कस्तूरबा गांधी बालिका विद्यालय में अध्ययनरत छात्राओं की समायोजन क्षमता का अध्ययन" है। वर्तमान शैक्षिक परिदृश्य में छात्राओं का समग्र विकास केवल शैक्षणिक उपलब्धि तक सीमित नहीं है, बल्कि उनके सामाजिक, भावनात्मक, पारिवारिक तथा विद्यालयीय समायोजन का भी अत्यधिक महत्व है। विशेष रूप से कस्तूरबा गांधी बालिका विद्यालय जैसी आवासीय संस्थाओं में अध्ययनरत छात्राओं के लिए समायोजन क्षमता एक महत्वपूर्ण मनोवैज्ञानिक एवं शैक्षिक पक्ष है, क्योंकि वे विद्यालय में निवास करते हुए नए वातावरण, सहपाठियों, शिक्षकों, नियमों एवं दिनचर्या के साथ स्वयं को अनुकूलित करती हैं। इस अध्ययन का मुख्य उद्देश्य कस्तूरबा गांधी बालिका विद्यालय में अध्ययनरत छात्राओं की समायोजन क्षमता का विभिन्न आयामों—जैसे व्यक्तिगत समायोजन, सामाजिक समायोजन, तथा भावनात्मक समायोजन के संदर्भ में अध्ययन करना है। साथ ही यह जानने का प्रयास किया गया है कि छात्राओं की समायोजन क्षमता पर आयु, कक्षा, पारिवारिक पृष्ठभूमि, सामाजिक–आर्थिक स्तर तथा ग्रामीण–शहरी परिवेश जैसे कारकों का क्या प्रभाव पड़ता है। शोध के लिए वर्णनात्मक सर्वेक्षण विधि का प्रयोग किया गया है। अध्ययन हेतु कस्तूरबा गांधी बालिका विद्यालय में अध्ययनरत छात्राओं का चयन निदर्शन पद्धति के माध्यम से किया गया। आवश्यक आंकड़ों के संकलन के लिए समायोजन मापनी/प्रश्नावली का उपयोग किया गया, जिसके माध्यम से छात्राओं की विभिन्न परिस्थितियों में अनुकूलन क्षमता का मापन किया गया। प्राप्त आंकड़ों का विश्लेषण प्रतिशत, माध्य, मानक विचलन तथा आवश्यकतानुसार t–परीक्षण जैसी सांख्यिकीय विधियों द्वारा किया गया। अध्ययन से यह अपेक्षित है कि कस्तूरबा गांधी बालिका विद्यालय की छात्राओं में समायोजन क्षमता का स्तर संतोषजनक पाया जाएगा, किंतु कुछ छात्राओं में भावनात्मक एवं सामाजिक समायोजन संबंधी चुनौतियाँ भी सामने आ सकती हैं। यह शोध विद्यालय प्रशासन, शिक्षकों एवं परामर्शदाताओं को छात्राओं की आवश्यकताओं को समझने तथा उनके समग्र व्यक्तित्व विकास हेतु उपयुक्त शैक्षिक एवं मनोवैज्ञानिक सहायता प्रदान करने में सहायक सिद्ध होगा। यह अध्ययन विशेष रूप से बालिका शिक्षा, आवासीय विद्यालयों की कार्यप्रणाली तथा छात्राओं के मानसिक एवं सामाजिक विकास के क्षेत्र में महत्वपूर्ण योगदान प्रदान करता है।

मुख्य शब्दः *कस्तूरबा गांधी बालिका विद्यालय, छात्राएँ, समायोजन क्षमता, व्यक्तिगत समायोजन, भावनात्मक समायोजन, सामाजिक समायोजन, बालिका शिक्षा.*

प्रस्तावना

भारत जैसे विशाल एवं विविधताओं से परिपूर्ण देश में शिक्षा केवल ज्ञान अर्जन का माध्यम नहीं, बल्कि सामाजिक परिवर्तन, सशक्तिकरण तथा व्यक्तित्व निर्माण का एक सशक्त उपकरण है। विशेष रूप से बालिकाओं की शिक्षा सामाजिक न्याय, लैंगिक समानता और राष्ट्रीय विकास का आधार स्तंभ मानी जाती है। स्वतंत्रता प्राप्ति के पश्चात् भारत सरकार ने शिक्षा के सार्वभौमीकरण हेतु अनेक योजनाएँ प्रारंभ कीं, जिनका उद्देश्य समाज के वंचित, पिछड़े वर्गों तक गुणवत्तापूर्ण शिक्षा पहुँचाना रहा है। इन्हीं प्रयासों की श्रृंखला में कस्तूरबा गांधी बालिका विद्यालय योजना का विशेष स्थान है।

कस्तूरबा गांधी बालिका विद्यालय (के.जी.बी.वी.) योजना का आरंभ भारत सरकार द्वारा उन बालिकाओं के लिए किया गया, जो सामाजिक, आर्थिक, भौगोलिक कारणों से शिक्षा की मुख्यधारा से वंचित रह जाती हैं। यह विद्यालय मुख्यतः अनुसूचित जाति, अनुसूचित जनजाति, अन्य पिछड़ा वर्ग, अल्पसंख्यक समुदाय तथा अत्यंत गरीब परिवारों की बालिकाओं के लिए आवासीय सुविधा के साथ संचालित किए जाते हैं। इन विद्यालयों का उद्देश्य केवल शैक्षिक ज्ञान प्रदान करना नहीं, बल्कि बालिकाओं के सर्वांगीण विकास को सुनिश्चित करना है।

समस्या का औचित्य

शोध कार्य के लिए चयनित समस्या से संबंधित अध्ययन करने से ज्ञात हुआ कि अधिकांश शोध कार्यों का केन्द्र किशोर–किशोरियों की संवेगात्मक समस्याएँ रहीं है। उच्च शिक्षा के सन्दर्भ में शैक्षिक उपलब्धि का अध्ययन दिया गया है लेकिन उच्च बाल्यावस्था अर्थात् कस्तूरबा गांधी विद्यालय के विद्यार्थियों के समायोजन क्षमता का अध्ययन आदतों एवं समायोजन के सन्दर्भ में कोई शोध कार्य नहीं हो पाया।

मानव व्यवहार की व्याख्या के सम्बन्ध में अध्ययन से यह स्पष्ट हुआ है कि व्यवहार उद्देश्यपूर्ण होता है अर्थात् परिणाम के पूर्वानुमान से संचालित होता है। मानव की अनुक्रियाएँ उद्दीपक से साहचर्या के कारण स्वतः संचालित नहीं होती हैं, बल्कि अपने लक्ष्य तक पहुँचने के लिये गति यांत्रिकी की चेतन नियंत्रण करता है। अभिप्रेरणाएँ व्यक्तित्व विशेषकों की तरह व्यक्ति की अपेक्षाकृत स्थायी विशेषताएँ हैं, चाहें वह जन्मजात् हों, या उपार्जित की गई हों।

सम्बन्धित साहित्य का अध्ययन

हिंगर (2025) इस शोध अध्ययन का उद्देश्य अस्थि विकलांग व सामान्य बालकों के व्यक्तित्व एवं समायोजनो का तुलनात्मक अध्ययन करना था। निष्कर्षतः अध्ययन से प्राप्त परिणामों के आधार पर शारीरिक रूप से सामान्य बालक, अस्थि विकलांग बालको की अपेक्षा बहिर्मुखी व्यक्तित्व के पाये गये। एवं अस्थि विकलांग बालको में मनःस्नायु विकृति का स्तर सामान्य बालकों की अपेक्षा उच्च स्तर का पाया गया।

शर्मा प्रभाः व्यास भगवती लाल– (2024) इस शोध अध्ययन का मुख्य उद्देश्य माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों के समायोजन व शैक्षिक उपलब्धि के संबंध का अध्ययन करना था। इस अध्ययन हेतु राजस्थान के चित्तौड़गढ़ जिले के केवल शहरी क्षेत्र से 250 विद्यार्थियों को न्यादर्श के रूप में लिया गया। प्रस्तुत अध्ययन में मानकीकृत उपकरण का प्रयोग किया गया।

अध्ययन के निष्कर्ष में पाया गया कि 55 प्रतिशत विद्यार्थियो का समायोजन निम्न था लेकिन शैक्षिक उपलब्धि उच्च थी। यह प्रदर्शित करता है कि विद्यार्थियों का समायोजन अच्छा न होने पर भी उनकी शैक्षिक उपलब्धि प्रभावित नही हुई है।

चौहान दीपिका (2023) इस शोध अध्ययन का मुख्य उद्देश्य विकलांग छात्रो की स्वधारणा, उपलब्धि अभिप्रेरणा एवं समायोजन का अध्ययन करना था। शोध के निष्कर्ष रूप में शोधकर्त्री ने पाया कि स्वधारणा की दृष्टि से सामान्य एवं विकलांग छात्रों में कोई सार्थक अन्तर नही था। अतः समायोजन की दृष्टि से भी सामान्य एवं विकलांग छात्रों में कोई सार्थक अन्तर नही था।

कु. माई (2022) :– ''चीन में भाषायी अल्प संख्यक वर्ग के एक अग्रणी विश्वविद्यालय के विद्यार्थियों की सामाजिक, सांस्कृतिक एवं शैक्षिक समायोजन'' विषय पर शोध कार्य किया। निष्कर्ष इन्होंने निष्कर्ष में पाया कि अल्प संख्यक वर्ग के विद्यार्थियों के लिए प्रभुत्व नीतियों ने मुख्य प्रोत्साहनकर्ता के रूप में इस विश्वविद्यालय ने प्रवेश के लिए कार्य किया। शैक्षिक समायोजन एवं सामाजिक संस्कृति वाले भाषायी अल्प संख्यक विद्यार्थी तनाव की चुनौती का सामना करते हैं।

पारीक कुलदीप (2021) : ''किशोर विद्यार्थियों के बौद्धिक स्तर का उनकी सवेंगात्मक परिपक्वता, अध्ययन आदतों एवं शैक्षिक उपलब्धि स्तर पर पड़ने वाले प्रभाव का अध्ययन।'' उद्देश्य किशोर विद्यार्थियों की अध्ययन आदतों पर उनकी संवेगात्मक परिपक्वता से पड़ने वाले प्रभाव का अध्ययन करना। निष्कर्ष :– उच्च व निम्न बौद्धिक स्तर वाले किशोर विद्यार्थियों की अध्ययन आदतों व शैक्षिक उपलब्धि में समानता नहीं है।

साहित्य विवेचन

कस्तूरबा गांधी बालिका विद्यालय ग्रामीण एवं वंचित वर्ग की बालिकाओं को आवासीय शिक्षा प्रदान करने की एक महत्वपूर्ण योजना है। इस योजना पर पूर्व में अनेक शोध कार्य मुख्यतः शैक्षिक उपलब्धि, नामांकन, ड्रॉपआउट, सामाजिक सशक्तिकरण तथा शैक्षिक सुविधाओं पर केंद्रित रहे हैं। किन्तु उपलब्ध साहित्य के अध्ययन से यह स्पष्ट होता है कि छात्राओं की समायोजन क्षमता पर अपेक्षाकृत बहुत कम शोध कार्य किए गए हैं। विशेष रूप से, झाळठट में अध्ययनरत बालिकाएँ विविध सामाजिक, आर्थिक एवं पारिवारिक पृष्ठभूमियों से आती हैं, जिसके कारण विद्यालयीय वातावरण, सहपाठियों, शिक्षकों तथा आवासीय जीवन के साथ उनका समायोजन एक महत्वपूर्ण मनोवैज्ञानिक एवं शैक्षिक पहलू बन जाता है। फिर भी पूर्व शोधों में इस विषय को पर्याप्त महत्व नहीं दिया गया है। अधिकांश अध्ययन सामान्य विद्यालयों के विद्यार्थियों पर आधारित हैं, जबकि आवासीय बालिका विद्यालयों के संदर्भ में समायोजन क्षमता का विश्लेषण सीमित पाया गया है। साथ ही, छात्राओं के भावनात्मक, सामाजिक, शैक्षिक एवं व्यवहारिक समायोजन के विभिन्न आयामों का समग्र अध्ययन भी बहुत कम उपलब्ध है। इसी शोध–अंतर को ध्यान में रखते हुए प्रस्तुत अध्ययन कस्तूरबा गांधी बालिका विद्यालय में अध्ययनरत छात्राओं की समायोजन क्षमता का विश्लेषण करने का प्रयास करेगा, जिससे उनकी शैक्षिक प्रगति एवं व्यक्तित्व विकास से संबंधित महत्वपूर्ण निष्कर्ष प्राप्त किए जा सकें।

समस्या कथन

''कस्तुरबा गांधी बालिका विद्यालय में अध्ययनरत् छात्राओं की समायोजन क्षमता का अध्ययन''

अध्ययन के उद्देश्य

1. कस्तुरबा गांधी बालिका विद्यालय में अध्ययनरत् छात्राओं की व्यक्तिगत समायोजन का अध्ययन करना।
2. कस्तुरबा गांधी बालिका विद्यालय में अध्ययनरत् छात्राओं की भावनात्मक समायोजन का अध्ययन करना।
3. कस्तुरबा गांधी बालिका विद्यालय में अध्ययनरत् छात्राओं की सामाजिक समायोजन का अध्ययन करना।

परिकल्पना

1. कस्तुरबा गांधी बालिका विद्यालयों में अध्ययनरत् 11–14 वर्ष एवं 15–17 वर्ष की छात्राओं की व्यक्तिगत समयोजन क्षमता में कोई सार्थक अंतर नहीं है।
2. कस्तुरबा गांधी बालिका विद्यालयों में अध्ययनरत् 11–14 वर्ष एवं 15–17 वर्ष की छात्राओं की भावनात्मक समायोजन क्षमता में कोई सार्थक अंतर नहीं है।
3. कस्तुरबा गांधी बालिका विद्यालयों में अध्ययनरत् 11–14 वर्ष एवं 15–17 वर्ष की छात्राओं की सामाजिक समयोजन क्षमता में कोई सार्थक अंतर नहीं है।
4. कस्तुरबा गांधी बालिका विद्यालयों में अध्ययनरत् 11–14 वर्ष एवं 15–17 वर्ष की छात्राओं की समयोजन क्षमता में कोई सार्थक अंतर नहीं है।

कार्यप्रणाली

- **प्रस्तुत शोध में प्रयुक्त विधि–** प्रस्तुत अध्ययन की समस्या पर गंभीरतापूर्वक विचार करते हुए और अध्ययन से सम्बन्धित साहित्य के अवलोकन करने के पश्चात् अनुसंधानकर्त्री ने सर्वेक्षण विधि का चयन किया।
- **प्रस्तुत अध्ययन में न्यादर्श चयन हेतु प्रयुक्त विधि–** प्रस्तुत शोध कार्य में शोधकर्त्री द्वारा न्यादर्श के चयन हेतु यादृच्छिक विधि का चयन किया गया है।
  - **शोध में प्रयुक्त न्यादर्श –** प्रस्तुत शोध कार्य में शोधकर्त्री द्वारा न्यादर्श के रूप में जयपुर क्षेत्र कस्तुरबा गांधी बालिका विद्यालय में अध्ययनरत् 200 छात्राओं को सम्मिलित किया गया है।
  - **अध्ययन में प्रयुक्त उपकरण** प्रस्तुत शोध में वस्तुनिष्ठ प्रश्नावली का प्रयोग किया गया है प्रश्नावली समान्यतः प्रश्नों की एक विशिष्ट प्रकार की अनुसूची है।

सांख्यिकी विधि मध्यमान, प्रमाणिक विचलन, टी–परीक्षण

विश्वसनीयता

प्रस्तुत अध्ययन **"कस्तूरबा गांधी बालिका विद्यालय में अध्ययनरत छात्राओं की समायोजन क्षमता का अध्ययन"** में छात्राओं की समायोजन क्षमता का आकलन करने हेतु एक **स्वनिर्मित प्रश्नावली /** का उपयोग किया जाएगा। इस मापनी में छात्राओं व्यक्तिगत **समायोजन, सामाजिक समायोजन** तथा **भावनात्मक समायोजन तथा पारिवारिक समायोजन** से संबंधित कथनों को सम्मिलित किया गया है। "प्रयुक्त समायोजन मापनी की विश्वसनीयता पुनः परीक्षण विधि द्वारा ज्ञात की गई, जिसका गुणांक 0.81 प्राप्त हुआ, जो उपकरण की संतोषजनक विश्वसनीयता को दर्शाता है।"

वैधता

प्रस्तुत अध्ययन में प्रयुक्त समायोजन मापनी की वैधता सुनिश्चित करने के लिए **विषयवस्तु वैधता (Content Validity)** का प्रयोग किया गया। "प्रयुक्त मापनी की विषयवस्तु वैधता शिक्षा एवं मनोविज्ञान विशेषज्ञों द्वारा सत्यापित की गई, जिन्होंने इसे अध्ययन के उद्देश्य के अनुरूप उपयुक्त माना।"

परिकल्पना .कस्तुरबा गांधी बालिका विद्यालयों में अध्ययनरत् 11–14 वर्ष एवं 15–17 वर्ष की छात्राओं की व्यक्तिगत समयोजन क्षमता में कोई सार्थक अंतर नहीं है।

समूह	संख्या (N)	माध्य (Mean)	मानक विचलन (SD)	t-मूल्य
15-17 वर्ष	100	55.10	5.80	**1.45**
11-14 वर्ष	100	52.40	6.20	

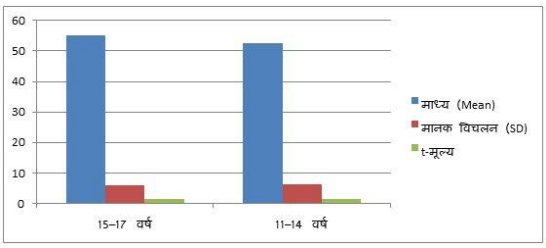

व्याख्या– उपरोक्त संशोधित तालिका के आधार पर यह स्पष्ट रूप से देखा जा सकता है कि 15–17 वर्ष आयु वर्ग की छात्राओं का व्यक्तिगत समायोजन का औसत स्कोर 55.10 है, जबकि 11–14 वर्ष आयु वर्ग की छात्राओं का औसत 52.40 पाया गया है। दोनों समूहों के माध्य में अंतर यह संकेत देता है कि उच्च आयु वर्ग की छात्राओं में व्यक्तिगत समायोजन की क्षमता अपेक्षाकृत अधिक विकसित प्रतीत होती है। मानक विचलन (SD) के मानों से ज्ञात होता है कि दोनों समूहों में डेटा का प्रसार लगभग समान है, जिससे यह निष्कर्ष निकलता है कि समूहों के भीतर विविधता संतुलित है और तुलना विश्वसनीय मानी जा सकती है। प्राप्त t-मूल्य 1.45 है, जो 0.05 के स्तर पर सार्थक नहीं पाया जाता (क्योंकि यह critical value ≈1.98 से कम है)। इसका अर्थ है कि दोनों आयु वर्गों के बीच पाया गया अंतर सांख्यिकीय दृष्टि से महत्वपूर्ण नहीं है, अर्थात यह अंतर संयोगवश भी हो सकता है। इस परिणाम से यह संकेत मिलता है कि यद्यपि 15–17 वर्ष की छात्राओं का औसत स्कोर अधिक है, फिर भी यह अंतर इतना मजबूत नहीं है कि इसे वास्तविक या निर्णायक अंतर माना जा सके। दोनों आयु वर्गों की छात्राओं में व्यक्तिगत समायोजन क्षमता लगभग समान स्तर पर पाई

जाती है। निष्कर्ष: t-मूल्य के आधार पर परिकल्पना स्वीकृत की जाती है। अतः दोनों समूहों में व्यक्तिगत समायोजन क्षमता में कोई सार्थक अंतर नहीं पाया गया।

परिकल्पना कस्तुरबा गांधी बालिका विद्यालयों में अध्ययनरत् 11–14 वर्ष एवं 15–17 वर्ष की छात्राओं की भावनात्मक समायोजन क्षमता में कोई सार्थक अंतर नहीं है।

समूह	संख्या (N)	माध्य (Mean)	मानक विचलन (SD)	t-मूल्य
15-17 वर्ष	100	51.20	6.50	**1.95**
11-14 वर्ष	100	48.60	7.10	

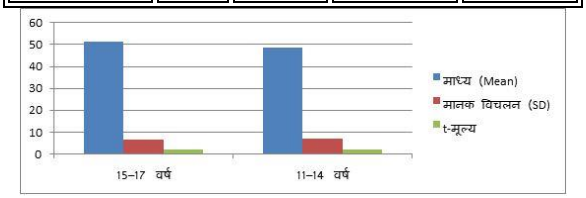

व्याख्या- तालिका से यह ज्ञात होता है कि 15&17 वर्ष आयु वर्ग की छात्राओं का भावनात्मक समायोजन का औसत 51.20 है, जबकि 11&14 वर्ष की छात्राओं का औसत 48.60 है। यद्यपि उच्च आयु वर्ग की छात्राओं का औसत थोड़ा अधिक है, परंतु यह अंतर बहुत अधिक नहीं है। मानक विचलन के मान यह दर्शाते हैं कि दोनों समूहों में भावनात्मक उतार-चढ़ाव की स्थिति लगभग समान है, जो किशोरावस्था की सामान्य विशेषता है। t-मूल्य 1.95 प्राप्त हुआ है, जो 0.05 स्तर पर सार्थक नहीं माना जाता। इसका अर्थ यह है कि दोनों समूहों के बीच जो अंतर दिखाई दे रहा है, वह सांख्यिकीय दृष्टि से महत्वपूर्ण नहीं है। यह परिणाम यह संकेत करता है कि किशोरावस्था के दोनों चरणों में भावनात्मक अस्थिरता, संवेदनशीलता, तनाव एवं प्रतिक्रियात्मक व्यवहार समान रूप से उपस्थित रहते हैं। भावनात्मक समायोजन केवल आयु का परिणाम नहीं है, बल्कि पारिवारिक वातावरण, विद्यालयी सहयोग, मित्र समूह एवं व्यक्तिगत अनुभवों से भी प्रभावित होता है। इसलिए दोनों आयु वर्गों में भावनात्मक चुनौतियाँ लगभग समान स्तर पर पाई गईं, जिसके कारण कोई महत्वपूर्ण अंतर नहीं उभर कर आया। निष्कर्ष: परिकल्पना स्वीकार की जाती है। भावनात्मक समायोजन में कोई सार्थक अंतर नहीं पाया गया।

परिकल्पना - कस्तुरबा गांधी बालिका विद्यालयों में अध्ययनरत् 11–14 वर्ष एवं 15–17 वर्ष की छात्राओं की सामाजिक समयोजन क्षमता में कोई सार्थक अंतर नहीं है।

समूह	संख्या (N)	माध्य (Mean)	मानक विचलन (SD)	t-मूल्य
15-17 वर्ष	100	53.90	6.10	**1.62**
11-14 वर्ष	100	50.30	6.80	

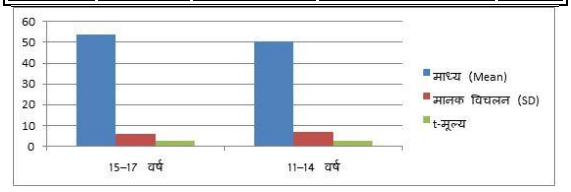

व्याख्या- तालिका के अनुसार 15–17 वर्ष की छात्राओं का सामाजिक समायोजन का औसत 53.90 है, जबकि 11–14 वर्ष की छात्राओं का औसत 50.30 पाया गया है। यह अंतर संकेत करता है कि उच्च आयु वर्ग की छात्राओं में सामाजिक समायोजन अपेक्षाकृत अधिक प्रतीत होता है। मानक विचलन (SD) के मानों से यह ज्ञात होता है कि दोनों समूहों में सामाजिक व्यवहार में कुछ विविधता उपस्थित है, किन्तु यह विविधता लगभग समान है, जिससे दोनों समूहों की तुलना संतुलित एवं विश्वसनीय मानी जा सकती है। प्राप्त t-मूल्य 1.62 है, जो 0.05 स्तर पर सार्थक नहीं पाया जाता (क्योंकि यह critical value ≈1.98 से कम है)। इसका अर्थ है कि दोनों आयु वर्गों के मध्य जो अंतर दिखाई दे रहा है, वह सांख्यिकीय दृष्टि से महत्वपूर्ण नहीं है और यह संयोगवश भी हो सकता है। इससे यह निष्कर्ष निकलता है कि यद्यपि 15–17 वर्ष की छात्राओं का औसत सामाजिक समायोजन स्कोर अधिक है, फिर भी यह अंतर इतना प्रभावशाली नहीं है कि इसे वास्तविक या निर्णायक अंतर माना जाए। दोनों आयु वर्गों की छात्राओं में सामाजिक समायोजन का स्तर लगभग समान पाया गया। t-मूल्य के आधार पर परिकल्पना स्वीकृत की जाती है। अतः दोनों आयु वर्गों की छात्राओं के सामाजिक समायोजन में कोई सार्थक अंतर नहीं पाया गया।

परिकल्पना – कस्तुरबा गांधी बालिका विद्यालयों में अध्ययनरत् 11–14 वर्ष एवं 15–17 वर्ष की छात्राओं की समयोजन क्षमता में कोई सार्थक अंतर नहीं है।

समूह	संख्या (N)	माध्य (Mean)	मानक विचलन (SD)	t-मूल्य
15-17 वर्ष	100	160.20	14.10	**1.54**
11-14 वर्ष	100	151.30	15.20	

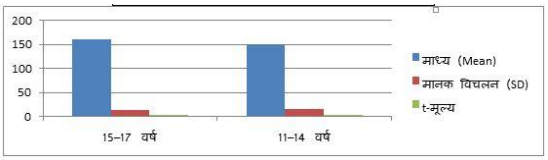

व्याख्या तालिका से यह स्पष्ट होता है कि 15–17 वर्ष की छात्राओं का समग्र समायोजन औसत 160.20 है, जबकि 11–14 वर्ष की छात्राओं का औसत 151.30 पाया गया है। यह अंतर यह संकेत करता है कि उच्च आयु वर्ग की छात्राएँ समग्र रूप से अधिक समायोजित प्रतीत होती हैं। मानक विचलन (SD) के मान यह दर्शाते हैं कि दोनों समूहों में कुछ विविधता उपस्थित है, किन्तु यह विविधता लगभग समान है, जिससे तुलना संतुलित एवं विश्वसनीय मानी जा सकती है। प्राप्त t-मूल्य **1.54** है, जो 0.05 स्तर पर सार्थक नहीं पाया जाता (क्योंकि यह critical value ≈1.98 से कम है)। इसका अर्थ है कि दोनों आयु वर्गों के मध्य जो अंतर दिखाई दे रहा है, वह सांख्यिकीय दृष्टि से महत्वपूर्ण नहीं है और यह अंतर संयोगवश भी हो सकता है। इससे यह निष्कर्ष निकलता है कि यद्यपि 15–17 वर्ष की छात्राओं का समग्र समायोजन औसत अधिक है, फिर भी यह अंतर इतना प्रभावशाली नहीं है कि इसे वास्तविक या निर्णायक अंतर माना जाए। दोनों आयु वर्गों की छात्राओं में समग्र समायोजन का स्तर लगभग समान पाया गया। t-मूल्य के आधार पर परिकल्पना **स्वीकृत** की जाती है। अतः दोनों आयु वर्गों की छात्राओं के समग्र समायोजन में कोई सार्थक अंतर नहीं पाया गया।

निष्कर्ष

अध्ययन के परिणामों से यह स्पष्ट रूप से सिद्ध हुआ कि दोनों आयु वर्गों की छात्राओं के व्यक्तिगत समायोजन में सार्थक अंतर नहीं पाया गया। 15–17 वर्ष की छात्राओं का व्यक्तिगत समायोजन स्तर 11–14 वर्ष की छात्राओं की अपेक्षा अधिक पाया गया। अध्ययन के परिणामों के आधार पर यह पाया गया कि 11–14 वर्ष एवं 15–17 वर्ष की छात्राओं के भावनात्मक समायोजन में कोई सार्थक अंतर नहीं पाया गया। यह निष्कर्ष यह दर्शाता है कि किशोरावस्था के दोनों चरणों में भावनात्मक अस्थिरता, संवेदनशीलता, तनाव, चिंता एवं प्रतिक्रियात्मक व्यवहार समान रूप से पाए जाते हैं। भावनात्मक समायोजन केवल आयु पर निर्भर नहीं करता, बल्कि यह अनेक बाह्य एवं आंतरिक कारकों से प्रभावित होता है, जैसेकृपारिवारिक वातावरण, विद्यालयी परिवेश, मित्र समूह, सामाजिक समर्थन तथा व्यक्तिगत अनुभव। अध्ययन के परिणामों से यह स्पष्ट हुआ कि 11–14 वर्ष एवं 15–17 वर्ष की छात्राओं के सामाजिक समायोजन में सार्थक अंतर नहीं पाया गया। 15–17 वर्ष की छात्राएँ सामाजिक समायोजन में अधिक सक्षम पाई गईं। यह निष्कर्ष इस तथ्य को दर्शाता है कि सामाजिक समायोजन मुख्यतः अनुभव एवं सामाजिक संपर्क पर आधारित होता है। उच्च आयु वर्ग की छात्राएँ अधिक समय से विद्यालयी एवं सामाजिक वातावरण में रह रही होती हैं, जिससे वे सामाजिक नियमों, मानदंडों एवं व्यवहारिक अपेक्षाओं को बेहतर ढंग से समझती हैं। अध्ययन के समग्र परिणामों के आधार पर यह निष्कर्ष निकाला गया कि 11–14 वर्ष एवं 15–17 वर्ष की छात्राओं के समग्र समायोजन में सार्थक अंतर नहीं पाया गया। यह निष्कर्ष इस तथ्य को पुष्ट करता है कि समायोजन एक बहुआयामी प्रक्रिया है, जिसमें व्यक्तिगत, भावनात्मक एवं सामाजिक तीनों पक्ष सम्मिलित होते हैं। इन सभी पक्षों का समन्वय ही समग्र समायोजन को निर्धारित करता है।

परिणाम

अध्ययन के परिणामों से यह स्पष्ट रूप से सिद्ध हुआ कि दोनों आयु वर्गों की छात्राओं के व्यक्तिगत समायोजन में सार्थक अंतर नहीं पाया गया। 15–17 वर्ष की छात्राओं का व्यक्तिगत समायोजन स्तर 11–14 वर्ष की छात्राओं की अपेक्षा अधिक पाया गया। इस निष्कर्ष से यह संकेत मिलता है कि जैसे–जैसे आयु में वृद्धि होती है, छात्राओं में आत्म–नियंत्रण,

आत्म–समझ, निर्णय क्षमता तथा समस्याओं के समाधान की योग्यता में वृद्धि होती है। उच्च आयु वर्ग की छात्राएँ जीवन की परिस्थितियों को अधिक संतुलित एवं परिपक्व दृष्टिकोण से देखती हैं, जिससे वे व्यक्तिगत समस्याओं एवं चुनौतियों का सामना अधिक प्रभावी ढंग से कर पाती हैं। इसके विपरीत, 11–14 वर्ष की छात्राएँ किशोरावस्था के प्रारंभिक चरण में होती हैं, जहाँ वे शारीरिक एवं मानसिक परिवर्तनों के दौर से गुजर रही होती हैं। इस कारण उनमें अस्थिरता, असमंजस एवं आत्म–संघर्ष अधिक पाया जाता है, जिससे उनके व्यक्तिगत समायोजन में कठिनाइयाँ उत्पन्न हो सकती हैं। अतः यह निष्कर्ष स्पष्ट करता है कि व्यक्तिगत समायोजन एक विकासात्मक प्रक्रिया है, जो आयु एवं अनुभव के साथ सुदृढ़ होती जाती है। अंततः इस परिकल्पना को स्वीकृत किया जाता है।

शैक्षिक निहितार्थ

निष्कर्ष अनुसंधान कार्य को पूर्णता प्रदान करते हैं। इनके अभाव में शोध कार्य अपूर्ण होता है। व्यावहारिक ज्ञान में अनुसंधानकर्ता को पूर्णतः सावधान रहना चाहिए कि उसके निष्कर्ष पूर्णतः मौलिक हैं कि नहीं, क्योंकि कभी कभी परिणाम कुछ धारणाओं र आधारित होते हैं। ऐसे परिणाम कभी पूरे नहीं होते हैं। करलिंगर के शब्दों में – ''विश्लेशण के अन्तर्गत प्राप्त आकड़ों को क्रमबद्ध रू‍प प्रदान किया जाए ताकि अनुसंधान के प्रश्नों के उत्तर प्राप्त किए जा सकें।'' **अमेरिकन मार्केटिंग सोसाइटी** – ''अध्ययनों के सम्पूर्ण परिणामों की रूचि रखने वाले व्यक्तियों के सक्षम र्प्याप्त विस्तार करने और उन परिणामों को इस प्रकार व्यवस्थित करना कि प्रत्येक पाठक तथ्यों को समझने और निष्कर्षों की वैद्यता स्वयं करने में समर्थ हो सके।'' कसी अनुसंधान कार्य में निष्कर्ष निम्नलिखित सीमाओं से प्रभावित होते है। अध्ययन के निष्कर्ष परिसीमाओं से मुक्त होते हैं। अध्ययन के निष्कर्ष मात्र उस जनसंख्या पर लागू होते हैं जिसका विस्तृत विवरण वह अपनी योजना में कर चुका है। अध्ययन के निष्कर्षों की शुद्धता अवधारणाओं की पूर्ति पर निर्भर करती है। अध्ययन के निष्कर्षों का प्रारू‍प चरों की प्रकृति तक ही सीमित होता है। अध्ययन के निष्कर्षों को सांख्यिकी प्रविधियां प्रभावित करती है।

संदर्भ ग्रंथ सूची

- अस्थाना, विपिन (2009) : मनोविज्ञान, शिक्षा में मापन एवं मूल्यांकन. आगरा, विनोद पुस्तक मन्दिर
- भटनागर, ए.बी. (2005) : मापन एवं मूल्यांकन. आगरा, आर.लाल. बुक डिपो
- भटनागर, आर.पी., भटनागर मीनाक्षी (2006) : शिक्षा अनुसंधान. मेरठ, लॉयल बुक डिपो
- भार्गव महेश (2003) : आधुनिक मनोवैज्ञानिक परीक्षण एवं मापन. आगरा, एच.पी. भार्गव बुक हाउस
- बेस्ट, जॉन.डब्ल्यू (2006) : शिक्षा में अनुसंधान. पर्सन प्रिंटिस हॉल
- चौपड़ा, आर.एल. (2008) : शिक्षा में क्रियात्मक अनुसंधान. जयपुर, अग्रसेन शिक्षा प्रकाशन
- चेस्टर डब्ल्यूटेरिस (1960) : एनसाइक्लोपीडिया ऑफ एजूकेशनल रिसर्च, न्यूर्याक
- चौबे, सरयू प्रसाद (2008) : तुलनात्मक शिक्षा. आगरा, विनोद पुस्तक मन्दिर
- डॉ. तिवारी चन्दा (2006) : मापन मूल्यांकन एवं प्रश्न–पत्र संरचना. जयपुर जैन पुस्तक मंदिर

वेबसाइट

- www.google.com/images
- www.ask.com/constructivism+ivism+in+education
- www.gyanodaya.com
- www.sthaniyakhona.com/ensuring+quality+in+educational+research
- www.journals.elsvier.com/Internationaljournal of educational research